

## Chapter 2: Pada - Meera Bai

### पद - मीराबाई

#### 1. Poet Introduction: Meera Bai

- जन्म: 1498 ई., कूड़की गाँव (राजस्थान), मेड़ता के राठौड़ राजपरिवार में
- पति: रत्न सहि राठौड़, दादा: राव दूदा जी
- बचपन: बचपन से ही कृष्ण के प्रति गहन भक्ति, कृष्ण की मूर्तियों को अपना पति मानती थीं
- विवाह: 1516 ई. में मेवाड़ के राजकुमार भोजराज से विवाह, लेकिन कुछ वर्षों बाद ही पति का देहांत
- भक्ति: कृष्ण की अनन्य भक्ति, माधुर्य भाव की भक्ति - कृष्ण को पति के रूप में पूजा
- संघर्ष: परिवार और समाज ने मीरा की सार्वजनिक कृष्ण भक्ति का वरिध किया
- भाषा: राजस्थानी और ब्रजभाषा का सुंदर मशिरण
- रचना शैली: गीतिकाव्य, पद-रचना, भावपूर्ण गीत
- मुख्य ग्रंथ: मीराबाई की मालिका, राग गोवदि, गीत गोवदि टीका, नरसी जी का मायरा
- मृत्यु: 1546 ई. (कुछ विद्वानों के अनुसार 1560 ई.), द्वारका में कृष्ण की मूर्ति में समा गईं

#### 2. Historical and Social Context

- भक्तिकाल: मीरा 16वीं सदी में भक्ति आंदोलन की प्रमुख कवयित्री थीं
- राजस्थानी समाज: उस समय राजपूत समाज में स्त्रियों को घूंघट में रहना पड़ता था, सार्वजनिक स्थानों पर जाना वर्जित था
- सामाजिक संघर्ष: राजपरिवार में जन्मी होने के बावजूद मीरा ने सामाजिक बंधनों को तोड़ा
- वरिध और अत्याचार: परिवार और समाज ने मीरा की कृष्ण भक्ति का कड़ा वरिध किया
- वषि का प्याला: राणा सांगा ने मीरा को मारने के लिए वषि भेजा, लेकिन कृष्ण की कृपा से वह अमृत बन गया
- सर्प का टोकरा: एक बार सर्प भेजा गया जो शालग्राम बन गया
- त्याग: मीरा ने राजसी जीवन, परिवार, समाज सब त्याग दिया और कृष्ण भक्ति में अपना जीवन समर्पित कर दिया
- वृंदावन और द्वारका: जीवन के अंतिम वर्ष वृंदावन और द्वारका में कृष्ण भक्ति में बितिए

#### 3. Literary Philosophy and Devotional Spirit

- माधुर्य भाव भक्ति: मीरा ने कृष्ण को अपना पति माना और उनसे प्रेम किया, यह सख्य भाव नहीं वात्सल्य भाव की भक्ति थी
- वरिह वेदना: मीरा के पदों में कृष्ण से मिलने की तीव्र इच्छा और वियोग की गहरी पीड़ा मिलती है
- समर्पण भाव: मीरा ने अपना तन-मन-धन सब कृष्ण को समर्पित कर दिया, "मेरे तो गरिधर गोपाल दूसरो न कोई"

- सामाजिक रूढ़ियों का वरिध: मीरा ने स्त्री को दी गई सामाजिक सीमाओं को चुनौती दी
- स्त्री स्वतंत्रता: मीरा पहली स्त्री थीं जिन्होंने खुलकर समाज के सामने अपनी भावनाएं व्यक्त की
- भक्ति में तल्लीनता: मीरा के लिए कृष्ण भक्ति ही जीवन का एकमात्र उद्देश्य था
- लोकनदि की उपेक्षा: मीरा ने समाज की आलोचना को कोई महत्व नहीं दिया

#### 4. Detailed Pada Analysis

पद 1: "मेरे तो गरिधर गोपाल दूसरो न कोई..."

प्रमुख पंक्तियाँ और व्याख्या:

- "मेरे तो गरिधर गोपाल दूसरो न कोई" - मीरा कहती हैं कि उनके लिए केवल श्रीकृष्ण हैं, उन्होंने कृष्ण को अपना सर्वस्व मान लिया है
- "जा के सरि मोर मुकुट मेरो पति सोई" - जिसके सरि पर मोर का मुकुट है, वही मेरे पति हैं (कृष्ण का प्रतीक)
- "संतन ढगि बैठ-बैठ लोक लाज खोई" - साधुओं की संगति में बैठकर मीरा ने लोक-लाज त्याग दी
- "अंसुवन जल सीचि-सीचि प्रेम बेल बोई" - आंसुओं के जल से प्रेम की बेल को सीचा और बोया
- "अब तो बात फैल गई जाने सब कोई" - अब सबको पता चल गया है कि मीरा कृष्ण की भक्ति हैं
- "दासी मीरा लाल गरिधर तारो अब मोई" - मीरा कहती हैं मैं आपकी दासी हूँ, अब मुझे तार दो

भावार्थ: मीरा ने समाज की परवाह किए बिना कृष्ण को अपना पति मान लिया। उन्होंने लोक-लाज त्याग कर कृष्ण भक्ति में अपना जीवन समर्पित कर दिया।

पद 2: "पग घुंघरू बांध मीरा नाची रे..."

प्रमुख पंक्तियाँ और व्याख्या:

- "पग घुंघरू बांध मीरा नाची रे" - मीरा ने पैरों में घुंघरू बांधकर कृष्ण के प्रेम में नृत्य किया
- "लोग कहे मीरा भई बावरी न्यात कहे कुल नासी रे" - लोग कहते हैं मीरा पागल हो गई, रशितेदार कहते हैं कुल की मर्यादा नष्ट कर दी
- "राणा भेज्या वषि का प्याला पीवत मीरा हांसी रे" - राणा ने वषि का प्याला भेजा, मीरा ने हंसकर पी लिया (कृष्ण की कृपा से अमृत बन गया)
- "मीरा के प्रभु गरिधर नागर हरचरणों में चित्त रे" - मीरा के प्रभु गरिधर नागर हैं, मीरा का मन हरिके चरणों में लगा है

भावार्थ: मीरा ने समाज की नदि और परिवार के वरिध की परवाह नहीं की। उन्होंने दृढ़ संकल्प के साथ अपनी भक्तिजारी रखी।

#### 5. Key Themes and Messages

- कृष्ण प्रेम की पराकाष्ठा: मीरा का कृष्ण के प्रति अगाध, अटूट प्रेम और पूर्ण समर्पण
- वरिह वेदना का चित्रण: कृष्ण से दूर रहने की असहनीय पीड़ा और मलिन की तीव्र लालसा
- सामाजिक बंधनों से मुक्ति: मीरा ने स्त्री होने के बावजूद समाज की बंधनों को साहसपूर्वक तोड़ा
- भक्ति में आनंद की अनुभूति: कृष्ण भक्ति में मलिन वाला परम आनंद और शांति
- लोक नदि की उपेक्षा: समाज की आलोचना को बिल्कुल महत्व नहीं देना

- आत्म-समर्पण का उदाहरण: पूरण रूप से कृष्ण को समर्पित होना, अपना सब कुछ न्योछावर करना
- स्त्री स्वतंत्रता का प्रतीक: मीरा उस युग में स्त्री स्वतंत्रता और आत्मनिर्भरता का प्रतीक बनीं
- भक्तिकी शक्ति: सच्ची भक्तिविषि को अमृत बना सकती है

## 6. Literary Devices and Poetic Beauty

- भाषा: राजस्थानी और ब्रजभाषा का मधुर मशिरण, सरल और हृदयस्पर्शी
- छंद: गीत शैली, पद रचना, लयबद्ध और संगीतमय
- अलंकार वधिनः
  - रूपक अलंकार: कृष्ण को पतभिन्नना, प्रेम को बेल बताना
  - उपमा: आंसुओं को जल से तुलना
  - अनुप्रासः "संतन ढगि", "लोक लाज"
- भाव पक्षः माधुर्य भाव, वरिह भाव, समर्पण भाव की त्रविणी
- संगीतात्मकता: मीरा के पद गाए जा सकते हैं, अत्यंत मधुर और लयबद्ध
- प्रतीक योजनाः
  - मोर मुकुट = कृष्ण की पहचान
  - घुंघरू = भक्ति में तल्लीनता
  - प्रेम बेलि = भक्ति का बढना
  - वषि का प्याला = जीवन की कठनाइयां
- लोक भाषा का प्रयोगः सरल, सहज और जनसामान्य की भाषा
- भावावेशः गहन भावनाओं की अभिव्यक्ति

## 7. Important Exam Questions

प्रश्न 1: मीरा ने कसिे अपना पतभिन्ना और क्योँ?

उत्तरः मीरा ने श्रीकृष्ण को अपना पतभिन्ना क्योँकि बिचपन से ही उनकी कृष्ण में अटूट आस्था थी । जब मीरा छोटी थी तब एक बारात देखकर उन्होँने अपनी मां से पूछा कि उनके पतकिौन हैं, तो मां ने मजाक में कृष्ण की मूर्तदिखा दी । उसी दिन से मीरा ने कृष्ण को अपना पतभिन्ना लिया और आजीवन उनकी भक्ति की ।

प्रश्न 2: समाज ने मीरा का वरिोध क्योँ कया? मीरा ने इसका सामना कैसे कया?

उत्तरः मीरा राजपरवार की थी और उस समय राजपूत समाज में स्त्रियों को घुँघट में रहना और सामाजिक बंधनों का पालन करना पडता था । मीरा ने सार्वजनिक रूप से कृष्ण भक्ति की, साधुओं के साथ बैठी, मंदिर में नृत्य कया - यह सब उस समय की मर्यादा के वरिुद्ध था । मीरा ने दृढ संकल्प और साहस के साथ सभी वरिोधों का सामना कया और अपनी भक्ति नहीं छोडी ।

प्रश्न 3: "वषि का प्याला" प्रसंग का क्या महत्व है? इससे क्या सीख मिलती है?

उत्तरः यह प्रसंग मीरा के अटूट वरििवास और कृष्ण की दविय कृपा को दर्शाता है । राणा ने मीरा को मारने के लिए वषि भेजा, लेकिन मीरा ने नडिरता से हंसते हुए उसे पी लिया । कृष्ण की कृपा से वह अमृत बन गया और मीरा को कुछ नहीं हुआ । सीखः सच्ची भक्ति में दविय शक्ति होती है जो सभी वषित्तियों से रक्षा करती है ।

प्रश्न 4: मीरा के पदों में वरिह वेदना का चतिरण कीजिए ।

उत्तरः मीरा के पदों में कृष्ण से बछिडने की गहरी पीडा है । वे कहती हैं "अंसुवन जल सीचि-सीचिप्रेम बेलबोई" - आंसुओं से प्रेम



प्रश्न 5: मीरा के पदों की भाषा शैली की विशेषताएं बताइए ।

उत्तर: (1) राजस्थानी-ब्रजभाषा का मधुर मश्रण, (2) सरल-सहज और हृदयस्पर्शी भाषा, (3) संगीतात्मक और लयबद्ध, (4) भावपूर्ण अभिव्यक्ति, (5) लोक भाषा का प्रयोग, (6) प्रतीकों और रूपकों का सुंदर प्रयोग ।